मांग उत्पन्न हो गई है। 1993–94 से शुरू करके इस प्रकार के सभी जिलों को अंततः चरणबद्ध ढंग से शामिल करने का लक्ष्य है।

सरदार सरोवर परियोजना

*173. **श्रीमती वीणा वर्मा :**
श्री सुशील कुमार संभाजीराव शिन्दे :

क्या **जल संसाधन** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या विश्व बैंक ने सरदार सरोवर परियोजना के लिये संवितरित न किये गए ऋण को रद्द करने के संबंध में भारत के अनुरोध को स्वीकार कर लिया है;

(ख) भारत को किन परिस्थितियों के तहत संवितरित न किये गए ऋण को रद्द करने के लिए अनुरोध करना पड़ा; और

(ग) इस प्रकार संवितरित न किये गये कितने ऋण को रद्द किया गया है ?

जल संसाधन मंत्री और संसदीय कार्य मंत्री (श्री विद्याचरण शुक्ल) : (क) जी हां।

(ख) विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है (नीचे देखिये)।

(ग) ऋण की अवितरित राशि लगभग 170 मिलियन अमरीकी डालर है।

विवरण

मई, 1985 में सरदार सरोवर बांध और विद्युत परियोजना के लिए 99.7 मिलियन एस० डी० आर० की आई० डी० ए० ऋण सहायता और 200 मिलियन अमेरिकी डालर की अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान विकास बैंक (आई० बी० आर० डी०) ऋण सहायता और परियोजना की नहर प्रणाली के लिए 149.5 मिलियन एस०डी०आर० की आई०डी०ए० ऋण सहायता हेतु विश्व बैंक के साथ समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए थे। 99.7 और 149.5 मिलियन अमेरिकी डालर के एस०डी०आर० ऋणों का उपयोग जुलाई, 1992 तक पूर्ण रूप से किया गया है। 532.2 मिलियन अमेरिकी डालर की कुल ऋण/क्रेडिट राशि के मुकाबले परियोजना ने फरवरी, 1993 तक कुल मिलाकर 333.666 मिलियन अमेरिकी डालर का उपयोग कर लिया है।

स्वतंत्र पुनरीक्षा रिपोर्ट के प्रकाशन और उस पर भारत सरकार के उत्तर के पश्चात् विश्व बैंक ने स्थिति की पुनरीक्षा की और 23-10-92 को परियोजना को सहायता जारी रखने का निर्णय लिया बशर्ते अप्रैल, 1993 में विशेष मिशन द्वारा मूल्यांकन किए जाने वाले विशिष्ट निष्पादन बेंचमार्कों को पूरा कर लिया गया हो। भारत सरकार, और गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश राज्य सरकारों ने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु उपयुक्त उपाय प्रारंभ कर दिए और उनको 5 माह के भीतर अर्थात् मार्च 1992 के अंत तक अधिकांशतः पूरा कर दिया था। तथापि, यह देखा गया कि परियोजना पर विवाद को जटिल बनाने और भारत और विदेशों में मामले को राजनीतिक रंग देने के प्रयास किए जा रहे थे। स्थानीय रूप से गड़बड़ी उत्पन्न करने के प्रयास भी किए गए, जिससे पुनर्वास और पुर्नस्थापना कार्य के कार्यान्वयन में बाधा पहुंची। वातावरण को और दूषित होने से बचाने के लिए भारत सरकार ने विश्व बैंक से सहायता न लेने और इस परियोजना के लिए क्रेडिट/ऋण के बकाया भाग का भुगतान नहीं लेने का निर्णय लिया।

पाठ्य पुस्तकों की मांग पूरी करने में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् (एन०सी०ई०आर०टी०) की विफलता

*174. **श्री गुफरान आजम :**
श्री कृष्ण कुमार बिरला :

क्या **मानव संसाधन विकास** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 12 अप्रैल, 1993 के 'दि टाइम्स ऑफ इंडिया' में "नीड टू रिव्यू प्राइवेटाइजेशन ऑफ टैक्सट